

१ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ जन्माष्टमी
 व्रतविधिविधिः ॥
 तृतीया दशम्या नैका
 यत् ॥ पञ्चम्या यत्
 धने ॥ वन्दनादिस्वल्प
 सूर्याय ॥ वदार्द्धमा
 वरुत् ॥ ॐ नत्वा यामा
 त्यादि ॥ धूपदीपमेव
 यज्यायस्तुतयार्थं
 कावयत् ॥ अर्चयामादि

नतः वृत्तीधर्मद्वन्द्वः ॥
 आचमनं ॥ ॐ अथत्यादि
 सूर्याय ॥ न्यासः ॥
 ॐ नमो विन्द्याय अस्तु यन
 मः ॥ एवं हृदयादि ॥
 अर्चयामुक्ता ॥ तमेव ॥
 आत्मयुक्ता विधिः ॥

१ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ जन्माष्टमी व्रतविधिविधिः ॥ तृतीया दशम्या नैका यत् ॥ पञ्चम्या यत् धने ॥ वन्दनादिस्वल्प सूर्याय ॥ वदार्द्धमा वरुत् ॥ ॐ नत्वा यामा त्यादि ॥ धूपदीपमेव यज्यायस्तुतयार्थं कावयत् ॥ अर्चयामादि

महाबालपूजनं ॥ जमाय २
ॐ गणेशाय नमः ॥ विजया
ॐ पुत्राय नमः ॥
ॐ दायपालाय नमः ॥
ॐ केशपालाय नमः ॥
आवाहनादि ॥ विष्णु इति ॥

आसनपूजनं ॥
ॐ आधाराय नमः ॥
ॐ अनन्ताय नमः ॥
ॐ यमाय नमः ॥
ॐ यणाय नमः ॥
ॐ केशवाय नमः ॥
ॐ कल्पिकाय नमः ॥
ॐ धर्माय नमः ॥
ॐ हानाय नमः ॥
ॐ वैराग्याय नमः ॥ ॐ वैश्याय
॥ ॐ ज्ञानाय ॥ ॐ ज्ञानाय ॥ ॐ ज्ञानाय ॥
ॐ ज्ञानाय ॥ ॐ ज्ञानाय ॥ ॐ ज्ञानाय ॥

ॐ अक्षय्याय नमः ॥
ॐ अक्षय्याय नमः ॥
ॐ अक्षय्याय नमः ॥
आवाहनादि ॥

लाकपालपूजनं ॥
ॐ ललाय नमः ॥
ॐ अक्षय्याय ॥
ॐ यमाय ॥
ॐ ज्ञानाय ॥
ॐ वक्राय ॥
ॐ वायव्य ॥
ॐ कृष्णाय ॥
ॐ ललाय ॥
ॐ अनन्ताय ॥
ॐ वक्राय ॥
आवाहनादि ॥

गुरुपूजनं ॥
ॐ आदिष्टाय नमः ॥

ॐ सामाय २॥
ॐ श्रीमन्मय २॥
ॐ वृक्षाय २॥
ॐ वृक्षस्य २॥
ॐ पुत्राय २॥
ॐ लनस्य २॥
ॐ ग्राहय २॥
ॐ कनक २॥
ॐ कनकनमः २॥

जावाहनादि ॥ अथस्थामादि

तमः कृष्णपूजनं ॥ गबालस्य मे
ॐ यामयथा नैव वा
यथा गयतथा गयसीह
वाय नैव न्याय नमा
नमः ॥ ॥ यत्रिवावपूज
नं ॥ ॐ दवकीनमः ॥
ॐ वसुधवाय २॥ वासुधारे
ॐ वाहिल्ये २॥

ॐ वलरुदाय २॥
ॐ ववसे २॥
ॐ मरुदाय २॥
ॐ वलिकाय २॥
ॐ यलमाय २॥
ॐ नन्दाय २॥
ॐ गन्नाय २॥
ॐ लया मनाय ॥
ॐ लयाय २॥
ॐ धनवीधवाय २॥
ॐ कलमाय २॥
ॐ कल्ले २॥
ॐ वानुवाय २॥
ॐ मरुिकाय २॥
ॐ पूतनाय २॥
ॐ सुविक्रमाय २॥
ॐ धनकाय २॥
ॐ पाहविकाय २॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

षष्ठिका पूजनं ॥ ॐ षष्ठी
 काथे नमः ॥ ॥ नाम कन
 वी ॥ ॐ प्राणायामः ॥
 रुतयासनं ॥ ॐ याः रु
 लेनी ॥ ॥ अन्नयासनं ॥
 ॐ अन्नयनं ॥ ॥ युजाक
 वली ॥ ॐ मूर्धनं दिवा
 ॥ यनवन्धनं ॥ ॐ यज्ञ
 यदीतं ॥ ॐ यज्ञो यदीतं युदा
 नं ॥ ॐ यज्ञो यदीतं युदा
 ॥ विवाहः ॥ ॐ गुप्तकय
 कामः ॥ ॥ दीक्षा यदानं
 ॥ ॐ वननदा कामा ॥ ॥
 ॐ तिकैर्मकत्वा कर्षुपू
 जयत् ॥
 आसनं ॥ ॐ आसनसु
 यदानानि रुतं सर्वत
 विन्दत । देवदेवस्य

श्री लोत्पलदत्तश्यामं पीताम्बरधरं हरिं । शंखचक्रगणपाणिं
ध्यात्वा क्लेशमनस्ररेत् ॥ ध्यानं ॥

कौण्डिन्याय मायासहिताय ॥
ॐ यमनाकाय धीः सहि
ताय ॥ ॐ दामादवाय
सहिमासहिताय ॥ ॐ
पीपुष्याय रुमाय लक्ष्मी
सहिताय ॥ ॐ दामाय
नामासहिताय नमः ॥
आवाहनादि ॥

धृयः ॥ धृयाय दवदव
निर्गन्धवक्रगदाध्वः ॥
पूष्याय भवद्वदहि य
नगुपगुणांगति ॥ ॥
दीपः ॥ दवस्त्रिजातिषा
शान्तिवयुकाण्युकाण
कः ॥ ॐ दशानि सुवान
न्दवापुदवनमा मुक्त ॥
ताम्रल ॥ पातालतलस
रुतं वदनाम्ना ज रुष

धृयः ॥ नानागुणसमायुक्ता
र्ण तासु लयुतिगृह्यता
॥ ॥ रुत ॥ ॐ ज्ञानाय
ज्ञानाय वाय ज्ञानयस्य
ज्ञानसंरुदाय ॥ विन्दा
यनमानमः ॥ ॥ नेवय ॥
वासुदवदयागालदव
कीनन्दनपुशागिख
वक्रगदाया ॥ लक्ष्मी
नाथपुणीदम ॥ फलश्रुति

मूर्धकात्रयम् ॥ ॐ दवावा
हकल्य ॥ ॐ मृयादि ॥ ॐ
जातः ॥ कौण्डिन्याय वक्ष्यते
रावावाव ॥ यय ॥ गृहा
॥ ॐ मयादहं दवकी
सहिताय ॥ पुका ॥ जापः ॥
मलुलदयकस्तु ॥ ॥



RN 3189

जन्माष्टमी व्रत विधि

जंगल्याक ४ कपानी प्रह्व
मिकुटिल्लमाधव ४ किं वस
ना नोचत्री किंकुलालोन
चधवलिधव किं द्विडिवा
हलिनदनाहं धावाहिम
दखगपनि हविष्मा किं
कपी (४) मूकलुचं स्थवा
धविवादपनि हगवचनी
पातुमी पद्मनारु

॥ मनुष्येन क्रियाहीनं विविदा नैकनाहं नमः ऊतु जिगं मया
दवयति यूर्ध्वं ददयुभ ॥ अथवाधसहसालि विगगहनि
लमया। दाएहमिनिमीमत्वा कमस्वमधुसुदन ॥ वनदे
हि मधुमदहि माय्यरुगवतुदहिभ। पूजा नैदहिधनीद
हि मवत्कामा यदहिभ ॥ तगाः युद दिर्गति ॥ मधुलि
ह्येनामिथ ॥ काखाला एवर्ण ॥ पथ्यगुवा क्लग यूजा। ददि
लम ॥ वाकः ॥ कतेगपूक म्पूऊनऊन्मनरुस्य कथाप्रवण

सुमिक्कार्थमिदं दिनं लघमनिदे वर्तयथानाममममयाय
वाक्कलभयाहृदद ॥ ॥ तगाः युसातपू नः क पू यूजा वि
धाय विसर्जनं ॥ उगङ्गनकुपयवृक्कनी पूजागपू नूषा
रुमः ॥ यणवृक्कादथाहवा विगानिधयमयद ॥
ॐ गिकृष्णमीवत विधिः समाक ॥ ॥ तगाः युक्क ॥ ॥

१ श्री कृष्णाय नमः ॥

सप्ताहने गुया ता जो लं ॥

ता १४ रंगियो ता य

यो ता य पु १

ता य पु ४

पु २ तो य ज जं का ली

पु ३ ह्या तु ज जं का ली

पु ३ ला उं ज जं का ली

पु ३ हा कु ज जं का ली

पु ३ वा उं ज जं का ली

पु १ नि ज ज जं का ली २०

कु १ द श यी १ ली

पु १ नि ज पु २ ली २०

पु १ नि ज इ ता ल ली २०

मा १ मा ल खान ली

ह १ तु शी ह ल ली

जु १ नै य श ली

मा १ ग्वाल ली

जो ३ सं ध्या जो लं ली ख ३ लु ता वा

पु ३ धो ति ला सु ली

पा १ पालं भु वा ली

पंचामृत गं गा जल

श्री वरा ३ क लूरी ले पश

स य न जो ली १ वा ता वा मु ति

ज वी द क य ता १

स ली १ व जि फो या

स ली १ ते छो व य सि ५

स ली १ घा कि जा कि

पु १ गो च गो यु

गो २ १ यों स ली

ज ग्य या ता

स्व सि का ३४ ली

कुं गा य मे न

का ६ वलागतसि

ह १० दलागतहल

वेखतोला ४॥

विवहमाहि

घाकिजाकि

जग्यवासमाकी

उं १ पादवखसा

ब्रह्मणायता नित्यदक्षिणामालको

सम्बत १० वतिति भाद्रवदि ७

वधवार धीकुसुसतुंगलया मनि

जुजुयाजिनायलाया सिधीनाथ

दुईनथवकायतलेजुसथाथोयेगु

दसखतसकलउपायाजुचिनिता

केनाजुलो॥ थोथाथोयज्यमजुने

सेलिः थोका मचा थाहावनेमदु

गुधहरेयाताउपाया श्रीतिलोतः

मराजः आचाजुजुवाजोसिजय

नराजसमेतमुचकयासकलपंच

दवथासः थोजुला रुनेआसगुरुपे

हितविजयराजयादलानमवाजु

थासः दुधुआगमममनीजुजुन

देवदुलपुयायंकुदवधियमु

ओजुसेलिधो^{या}मत्रानूवा नेमदुधका

गाजयेजुलो॥ ॥ ॥

१ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ रोहिण्या
 सहिता कृष्णामासि भाद्रपदे
 मी ॥ ॥ अर्धरात्रे तु योगो यं तारा
 पत्युदये तथा ॥ नियतात्मा सुचिः
 सम्पक् पूजां तत्र प्रवर्तयेत् ॥ इति वि
 श्वधर्मो रितस्य पूजा कालवोक्तेः ॥
 दिनद्वये अर्द्धरात्र्या प्रावव्याप्नो वायरे
 व ॥ प्रातः संकल्पकाले सत्त्वादिवारत्रि
 योगा ॥ १ ॥ र्जनीया प्रयत्नेन संप्रभी संयुता
 सामीति बुद्धि वैवर्त्ये संप्रभी युक्ता
 निषेधाच्च ॥ यदा पूर्वेद्युर्निशीथे केव
 लाष्टमी ५ तरे द्युर्निशीथा स्य शिन्ध
 ष्ठी रोहिणी युक्ता तदा पूर्वेव ग्राह्या
 ॥ कर्म काल सत्त्वा तारा रोहिणी योगस्य
 केवलां फलाति सयार्धे नवमी बुधदियो
 गवन्न तु निशीथः पर्योगी ॥ २ ॥ इतरथा
 प्रेत्यो निगतानां तु प्रेतत्वं नास्ति तन्नरैः ॥
 येः कृताश्चावशो भासि मस्तभी रोहिणी यु

ता ॥ किंपुनर्बुधवारे न सोमेनापि
 विषेधतः ॥ किंपुन नवमी युक्ता कु
 लकोट्या मुमुक्तिदेति सरोहिणी
 मप्यस्तभी विहाय बुधनवमी युक्ता का
 योपदेत् ॥ ३ ॥ उये चास्तमि कि
 नवमी सकलाद्यदि ॥ भवेत्तु बुधसंयु
 क्ता प्राजापत्यर्क्षसंयु ॥ ॥ अपि व
 र्धतेनापि लभ्यते यदि वा नवा ॥ तत्र
 उदयशब्दश्चन्द्रोदयपरः यावद्
 वनं वाचनिकमिति ॥ ॥ माया
 त्

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ आदि
 भूतगिरिजापतिशम्भुकालका
 नकरुणामयशूली॥ योगि
 गम्पपरमात्माकरूपं ब्राहि
 मांभवसागरदुःखं॥ १॥ सगु
 णानीगुणिकाशविकाशीज्यो
 तिरूपसकलात्मकरूपं॥
 स्फाटिकोपमनिर्मलदेहं
 ब्राहिमांभवसागरदुःखं॥
 २॥ पञ्चभूतमयतत्त्वत्वमे
 ववजुनादिरसचक्रभेदा॥
 पूणविलसनातननित्य
 ब्राहिमांभवसागरदुः
 खं॥ ३॥ कामक्रोधभय
 नास्तिकज्ञाननाशहेतु
 करुणाकरमूर्तिः॥ दिव्य
 ज्ञानवरदायकदेवत्रा

भूतगिरिजापतिशम्भु

हिमी॥ ४॥ मोहजालप
 रिपंचकबुद्धिजनमृत्यु
 भवबंधनकर्म॥ मोक्ष
 कारणाश्रयाशिवमूर्ति
 ॥ ब्राहिमांभवसागरदुः
 खं॥ ५॥ चन्द्रशेखरक
 वन्धकहारनागचर्म
 वसनाहिरिभूषणव्याघ्र
 चर्मवेष्टितरम्य॥ ब्राहि
 मां॥ भूधरपतिजानि
 केतनशम्भुहृदयसरो
 वरमावसहस॥ पद्म
 विलग्ननिवाशितज्योति
 ब्राहिमांभवसागरदुः
 खं॥ ७॥ वृषहरिआस
 नविराजितस्वेच्छम

नमय व्यापित ज्ञान प्र
काश सिद्धि बुद्धि सक
लार्थकदापि त्राहि मां
भवसागर दुःखं ॥ ८ ॥ इ
ति श्रीमदाद्या भक्त चरि
तं श्रीसदाशिवोष्कं सं
पूर्णं कृतं भवभयभञ्ज
नस्तोत्रम् स एव पूर्णम् शुभम्

